**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

# अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में निर्भरता सद्धांत

श्री बंशीलाल
सह आचार्य-राजनीति वज्ञान
श्री कल्याण राजकीय कन्या महा वद्यालय, सीकर

अंतर्राष्ट्रीय संबंध राजनीति वज्ञान का वह क्षेत्र है जो संप्रभु राज्यों के बीच संबंधों से संबं धत है l यह एक राज्य के दूसरे राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ उसके व्यवहार का अध्ययन करता है l यह व भन्न राज्यों के मध्य सहयोग -असहयोग, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भू मका और कार्य , जलवायु परिवर्तन आतंकवाद , शरणा र्थयों और प्रवा सयों जैसी नई चुनौतियों से निपटने के तरीकों की जाँच करता है l अंतर्राष्ट्रीय संबंध वश्व व्यवस्था को व भन्न दृष्टिकोणों से समझने में मदद करता है जो आगे वैश्विक शांति और वकास का कारण हो सकते हैं l

1930 के दशक से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने में उदारवादी और यथार्थवादी दृष्टिकोणों की मुख्य भू मका रही है l इन दृष्टिकोण को पारंपरिक रूप से कूटनीति तथा सैन्य एवं रणनीतिक क्षमताओं और उन्हें वस्तारित करने के तरीकों के संदर्भ में समझा जाता था l 1960 के दशक में व्यवहारवादियों ने राज्य एवं गैर राज्य शक्तियों के व्यवहार को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने की कसौटी बना दिया l अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में 1970 से 1980 का दशक बहुत महत्वपूर्ण रहा है l इस दशक में एक तरफ उदारवादियों और यथार्थवादियों ने अपने-अपने ढंग से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझाने की को शश की तो दूसरी तरफ मार्क्सवादि यों ने आ र्थक दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की व्याख्या प्रस्तुत की l 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध में प्रत्यक्षवादियों और गैर -प्रत्यक्षवादियों ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की l प्रत्यक्षवादियों ने तथ्यों में निहित वस्तुगत ज्ञान के रूप में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने पर बल दिया l वस्तुवादी दुनिया को एक अराजक जगह मानते हैं जिसमें राज्य , शुन्य योग संबंधों के माध्यम से व्यवहार करते हैं जब क गैर -प्रत्यक्षवादी मूल्यों और व्यक्तिपरकता को अपने सद्धांतों का आधार बनाते हैं l उदाहरण के लए नारीवादियों के अनुसार दुनिया पतृसत्तात्मक है और एक समतावादी वश्व व्यवस्था की स्थापना तभी की जा सकती है जब महिलाओं के साथ उ चत और समान व्यवहार कया जाए l

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सामाजिक, आ थक एवं राजनीतिक वकास के उदारवादी सद्धांतों के वरोध में 1950 के दशक में लैटिन अमेरिकी देशों में निर्भरता सद्धांत का आ वर्भाव हुआ l निर्भरता सद्धांत को अन्य राज्यों के क्रयाकलापों के कारण राष्ट्र राज्यों के आ थक पछड़ेपन की व्याख्या करने के रूप में देखा जाता है l सद्धांत के प्रमुख समर्थकों में से थयोटोनियो डॉस सैंटोस (1936-2018) ने इसे ऐतिहा सक परिप्रेक्ष्य में परिभा षत करते हुए कहा है क यह सद्धांत वश्व अर्थव्यवस्था की संरचना को कुछ देशों के पक्ष में बना देता है जिससे दूसरे देशों के वकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है l निर्भरता एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें कसी देश की अर्थव्यवस्था दूसरे देश की अर्थव्यवस्था से प्रभा वत एवं अनुकू लत होती है l यह सद्धांत द क्षणी गोलार्द्ध के देशों के निरंतर आ थक पछड़ेपन और अ वक सतता के कारणों को समझने और समझाने का प्रयास करता है l निर्भरता अनेक रूपरेखाओं का एक समूह है जिसमें आ थक रूप से परनिर्भर राष्ट्रों अथवा क्षेत्रों की सामाजिक , सांस्कृतिक, आ थक और वदेश नीति पर प्रभाव की समझ शा मल है l इस सद्धांत को अनेक वद्वानों ने अलग - अलग तरीके से बताने का प्रयास कया है **l** जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं-

## मध्यम निर्भरता सद्धांत

अर्जेंटीनी अर्थशास्त्री राउल प्रीबिस ( 1901-1986) के लैटिन अमेरिकी देशों के आ थक पछड़ेपन से संबं धत अध्ययन "द इकोनॉ मक डेवलपमेंट ऑफ लैटिन अमेरिका एंड इट्स प्रं सपल प्रॉब्लम्स" (1950) ने निर्भरता सद्धांत की उत्पत्ति में प्रमुख भू मका निभाई है l उनके अनुसार लैटिन अमेरिकी देशों की वक सत देशों के साथ व्यापार की प्रतिकूल शर्तें टीओटी ने उनकी आ थक स्थिति को खराब कर दिया है l टीओटी कसी देश की निर्यात और आयात कीमतों के बीच का अनुपात होता है l लैटिन अमेरिकी देश प्राथ मक वस्तुओं के उत्पादक हैं और वे इन्हें औद्यो गक रूप से उन्नत देशों को निर्यात करते हैं l औद्यो गक रूप से उन्नत देशों द्वारा इन प्राथ मक वस्तुओं को संसा धत कर तैयार उत्पादों में बदल दिया जाता है और यह तैयार उत्पाद लैटिन अमेरिकी देशों सहित सभी वकासशील देशों को निर्यात कए जाते हैं l अर्थात इन देशों द्वारा प्राथ मक वस्तुओं को कम दामों पर निर्यात कया जाता है और तैयार उत्पादों को उच्च कीमतों पर खरीदा जाता है जिससे उनकी अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है l इस प्रकार प्राथ मक वस्तुओं का उत्पादन करने वाले देशों और तैयार उत्पादों का उत्पादन करने वाले देशों के बीच आ थक अंतर उनके बढ़ते आ थक संबंधों के साथ मलकर बढ़ने से प्राथ मक वस्तुओं के उत्पादकों की अर्थव्यवस्था दिन-प्रतिदिन गर रही है l

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रीबिस ने तुलनात्मक लाभ के सद्धांत और उदार अर्थशास्त्रियों के इस दृष्टिकोण को चुनौती दी क वकासशील देशों को मुक्त व्यापार से लाभ उठाने के लए प्राथ मक वस्तुओं के उत्पादन में वशेषज्ञ होना चाहिए । उन्होंने वश्व अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लए वकास-अ वक सतता और कोर-परि ध के वरोधों पर आधारित एक संरचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत कया l उदारवादी सद्धांतों के वपरीत प्रीबिस का दृष्टिकोण द क्षणी गोलार्द्ध के देशों के वकास और अ वक सतता के वषय में अनुभवमूलक अध्ययन पर आधारित था l प्रीबिस ने लैटिन अमेरिकी देशों में आ र्थक पछड़ेपन के कारणों को निर्धारित करने के बाद उन्हें दूर करने के लए राज्य के हस्तक्षेप , लैटिन अमेरिका के आ र्थक एकीकरण , वषमताओं को दूर करने के लए भू म सुधार और आयात प्रतिस्थापन औद्यो गीकरण जैसी अनेक सफारिशें की l आयात प्रतिस्थापन औद्यो गीकरण एक ऐसी व्यापार नीति है जो स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देकर आयात को कम करने पर बल देती है l इस नीति का प्रमुख उद्देश्य आयात में कमी करना है जिससे व्यापार घाटे की समस्या का समाधान होता है, स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा मलता है जिससे औद्यो गक आत्मनिर्भरता प्राप्त होती है और आ र्थक वकास को बढ़ावा मलता है l ले कन प्रीबिस की सफारिशों के सफल कार्यान्वयन में कुछ बाधाएँ इस प्रकार थी -

1. लैटिन अमेरिकी देशों के पास छोटे पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करने और कीमतों को कम रखने के लए पर्याप्त संसाधन नहीं थे l
2. लैटिन अमेरिकी देशों की कृ ष अर्थव्यवस्थाओं को औद्यो गक अर्थव्यवस्था में बदलना एक दुष्कर कार्य था l
3. इन देशों के पास औद्योगीकरण के लए आवश्यक भारी मशीनरी का अभाव था l

## अतिवादी निर्भरता सद्धांत

अतिवादी निर्भरता सद्धांत मार्क्सवाद और लेनिन की साम्राज्यवादी समझ पर आधारित है l आंद्रे गुंडर फ्रैंक, जेम्स काक्रॉफ्ट और डेल जॉनसन अतिवादी निर्भरता सद्धांतवादी माने जाते हैं l इस सद्धांत के अनुसार निर्भरता संबंधों के पीछे मुख्य उद्देश्य वैश्विक पूंजीवाद है l वक सत देश अपने तैयार उत्पादों की खपत के लए वकासशील देशों में बाजार तलाशते हैं तथा अपने निवेश के लए इन देशों को गंतव्य मानते हैं l वकासशील देश वक सत देशों से ऋण लेते हैं तथा इन ऋणों को चुकाने से उनकी अर्थव्यवस्था बिगड़ जाती है l इन सद्धांतकारों का मानना है क द क्षणी गोलार्द्ध के देशों में अ वक सतता एक ऐतिहा सक उत्पाद है जो अ वक सत अवस्था से भन्न अवस्था होती है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

l अ वक सत अवस्था वकास की कमी की स्थिति है जब क अ वक सतता दूसरे देशों द्वारा शोषण की परिणति है l साम्राज्यवादी शक्तियों के उपनिवेशवाद , शोषण और सामाजिक , आ र्थक एवं राजनीतिक पुनर्गठन ने पूर्व कॉलोनियों को परि धीय और उनके पूर्व स्वामीयों को केंद्र या कोर में बदल दिया है l परिणामत: परि ध के देशों को पूंजी , प्रौद्यो गकी और तैयार माल के लए कोर पर निर्भर रहना पड़ता है l दूसरे शब्दों में उपनिवेशवाद ने वकासशील देशों को प्राथ मक वस्तुओं व सस्ते श्रम के स्रोत तथा पूंजी , प्रौद्यो गकी और तैयार माल की खपत के भंडार में बदल दिया है l

अतिवादी निर्भरता सद्धांतकारों के अनुसार पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा लागू श्रम का कठोर अंतर्राष्ट्रीय वभाजन दुनिया के इन देशों में अ वक सतता के लए जिम्मेदार है l यहाँ पर परि ध राज्यों को प्राथ मक वस्तुओं का आपूर्तिकर्ता माना जाता है ले कन इन राज्यों को क्या आपूर्ति करनी है और उन्हें पूंजी व प्रौद्यो गकी के रूप में क्या प्राप्त करना है इसका निर्धारण कोर राज्यों के आ र्थक हितों से होता है l अर्थात परि ध राज्यों का अपने वकास से संबं धत मामलों पर कोई नियंत्रण नहीं है । ऐसी स्थिति में कोर और परि ध राज्यों में सरकारें पूंजीपतियों के हितों को संतुष्ट करने की को शश करती हैं l कोर व परि ध राज्यों में पूंजीपति वर्ग का यह नियंत्रण पूंजीवाद के उच्चतम चरण की वशेषता है l इस स्थिति में परि ध देश संप्रभुता के नुकसान का अनुभव करते हैं क्यों क निर्णय लेने की शक्ति कोर देशों के पास है । इस प्रकार कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता यह देश कोर देशों की अर्थव्यवस्थाओं के संलग्नक बन जाते हैं l यही कारण है क लैटिन अमेरिकी देशों में वास्त वक राष्ट्रीय पूंजीवाद नहीं होकर निर्भर पूंजीवाद है और यह निर्भर पूंजीवाद कोर देशों की अर्थव्यवस्थाओं में की गई प्र क्रयाओं और निर्णयों का परिणाम है l

अतिवादी निर्भरता सद्धांतकारों का मानना है क द क्षणी गोलार्द्ध के देश अपने वकास के लए पश्चिमी मार्ग का अनुसरण नहीं कर सकते हैं क्यों क उपनिवेशों में लंबे समय तक रहे उपनिवेशवाद द्वारा सामाजिक, राजनीतिक एवं आ र्थक व्यवस्थाओं के पुनर्गठन ने कोर और परि ध राज्यों के बीच संबंधों का एक असमान ढांचा तैयार कर दिया है l इसने परि ध राज्यों को प्राथ मक वस्तुओं के आपूर्तिकर्ता के रूप में तथा कोर राज्यों को तैयार उत्पादों के उत्पादकों के रूप में बना दिया है l इसके अतिरिक्त व्यापार की शर्तें परि ध राज्यों की कीमत पर कोर राज्यों के पक्ष में हैं जो कोर और परि ध राज्यों के बीच असमानताओं को और अ धक चौड़ा कर देती हैं l इन सद्धांतकारों के अनुसार प्राथ मक वस्तुओं और तैयार उत्पादों के बीच का आदान-प्रदान केवल वकासशील देशों की स्थिति

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

को कमजोर ही नहीं करता है बल्कि यह असमान वनिमय अ वक सतता के वकास को भी आगे बढ़ाता है l इस प्रकार आंद्रे गुंडर फ्रैंक के अनुसार अ वक सतता , अ वक सत से अ धक वक सत देशों के शोषण द्वारा बनाई गई स्थिति है तथा एक समाजवादी क्रांति ही इस शोषणकारी और आ श्रत रिश्ते से अलग होने का एकमात्र तरीका है l

## वश्व व्यवस्था निर्भरता सद्धांत

इम्मानुएल वालरस्टीन द्वारा प्रस्ता वत वश्व व्यवस्था सद्धांत निर्भरता सद्धांत का व्यापक संस्करण है l उदारवादी और अतिवादी निर्भरता सद्धांतकार कोर और परि ध राज्यों के बीच आ र्थक संबंधों के आधार पर अपने अध्ययन को सी मत करते हैं जब क वश्व व्यवस्था सद्धांत एक व्यापक भौगो लक ढांचे पर केंद्रित है l वश्व व्यवस्था सद्धांत के अनुसार आज के समय में दुनिया को केवल वैश्विक पूंजीवाद के वकास के संदर्भ में समझा जा सकता है क्यों क आज केवल एक वश्व व्यवस्था है जो क एक पूंजीवादी वश्व अर्थव्यवस्था पर आधारित है l वालरस्टीन के अनुसार अ धकतम लाभ प्राप्त करने के लए बाजार के लए उत्पादन और कोर व परि ध राज्यों के बीच असमान वनिमय संबंध इसकी वशेषता है l इसके अतिरिक्त इस वैश्विक पूंजी वाद ने एक पदानुक्र मत सरंचना उत्पन्न की है जो इस वश्व अर्थव्यवस्था के भीतर प्रत्येक राज्य की स्थिति निर्धारित करती है l इस श्रेणीबद्ध संरचना और बाजार तंत्र के माध्यम से कोर , परि ध का शोषण करता है l

वालरस्टीन ने कोर और परि ध के बीच एक अर्द्ध -परि ध को तीसरी श्रेणी के रूप में प्रस्तुत कया है l अर्द्ध-परि ध में वश्व की उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों को शा मल कया है I जैसे भारत, चीन, द क्षण अफ्रीका और ब्राजील l इन सद्धांतकारों के अनुसार कोर-अर्द्ध परि ध-परि ध पदानुक्रम में स्थिति बदलने की संभावना बहुत कम होने के कारण यह तीनों पूंजीवादी वश्व अर्थव्यवस्था की स्थाई वशेषताओं के रूप में बनी हुई हैं l अर्ध-परि ध, राज्यों को परि ध एवं कोर में वभाजित करती है तथा यह कोर के वरुद्ध एकीकृत वरोध को एक कठिन कार्य बनाती है l अर्द्ध-परि ध व परि ध में दुनिया के वभाजन के कारण कोर अपना आ धपत्य बनाए रखता है l इन सद्धांतकारों के अनुसार पूंजीवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था के अंदर वरोधाभास ही इसकी गरावट का कारण बनेगा और समाजवाद द्वारा इसके प्रतिस्थापन की दिशा में ले जाएगा l

## ऐतिहा सक परिप्रेक्ष्य

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निर्भरता एक ऐतिहा सक प्र क्रया का परिणाम है । सदियों से औपनिवे शक और प्रमुख पूंजीवादी शक्तियों ने उपनिवे शों और अ वक सत देशों के सामाजिक , आ र्थक संस्थानों का पुनर्गठन कर इन की अर्थव्यवस्थाओं को संसाधन आपूर्तिकर्ता के रूप एकीकृत कया, जिससे यह देश या क्षेत्र पूंजीवादी देशों द्वारा नि र्मत तैयार माल के लए प्राथ मक वस्तुओं और बाजारों के आपूर्तिकर्ता बन गए l निर्भरता सद्धांतकारों के अनुसार उपनिवेशवाद की औपचारिक रूप से समाप्ति के बाद भी वश्व अर्थव्यवस्था की सरंचना बिना कसी बदलाव के यथावत बनी हुई है l इस प्रकार पूर्व उपनिवेश और अन्य संसाधन उत्पादक क्षेत्र वैश्विक पूंजीवाद की परि ध में बने हुए हैं जिसका यूरोप लम्बे समय तक कोर या केंद्र रहा, जो पछले 100 वर्षों से संयुक्त राज्य अमेरिका स्थानांतरित हो गया है l

निर्भरता सद्धांतवादी वश्व अर्थव्यवस्थाओं को दो व्यापक श्रे णयों (कोर और परि ध) में वभाजित करते हैं l मुख्य उन्नत अर्थ व्यवस्थाएँ उत्तरी गोलार्ध में स्थित हैं l यह देश वक सत देश हैं । जैसे यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान आदि l उन्नत प्रौद्यो गकी और औद्योगीकरण इन देशों की वशेषता है जो शक्तिशाली राज्य सरकारों , एक मजबूत मध्यम वर्ग और एक बड़े श्र मक वर्ग द्वारा सम र्थत है l द क्षणी गोलार्ध के वकासशील और कम वक सत देशों को परि ध व पछलग्गू जैसे शब्दों से संद र्भत कया जाता है l जैसे अफ्रीका, द क्षण ए शया और लैटिन अमेरिका l यह देश प्राथ मक वस्तुओं के उत्पादन पर निर्भर हैं । इन देशों को कमजोर राज्यों, एक छोटे मध्यम वर्ग और बड़ी संख्या में कम कौशल और कृ ष श्र मकों के रूप में चत्रित कया जाता है l इम्मानुएल वालरस्टीन ने इन दो स्थितियों के अलावा एक मध्यवर्ती अर्द्ध -परि ध स्थिति भी बताई है और वश्व की उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं वाले राज्यों जैसे भारत , चीन, द क्षण अफ्रीका और ब्राजील को इस श्रेणी में रखा है l यह राज्य कम लाभदायक परिधीय प्रकार की आ र्थक गति व धयों से अ धक लाभदायक कोर प्रकार वाले लोगों की ओर बदलाव देख रहे हैं l निर्भरता सद्धांतकार परि ध के भीतर एक क्षेत्र के रूप में 'परिक्षेत्र अर्थव्यवस्था' को परिभा षत करते हैं जिसमें कोर राज्यों द्वारा कच्चे माल जैसे खनिज, तेल वृक्षारोपण आदि के लए पूंजी का निवेश कया जाता है l यद्य प इससे कुछ लोगों को रोजगार अवश्य मलता है परंतु यह परि ध की आ र्थक स्थिति में सुधार नहीं करता है l इस प्र क्रया से इन क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधन कम हो जाते हैं और परिक्षेत्र वकास की कमी से ग्रस्त रहता है l

आ र्थक वकास के उदारवादी वचारक एडम स्मिथ ने तर्क दिया है क यदि आ र्थक गति व धयों को बिना प्रतिबंधों के संचा लत करने की अनुमति दी जाती है तो वे अपने

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वयं के नियमों के अनुसार काम कर समाज में अपार प्रगति लाएगा l स्मिथ ने 'लैसेज फेयर' सद्धांत का समर्थन करते हुए आ थक गति व धयों में कम से कम सरकारी हस्तक्षेप का समर्थन कया है l डे वड रिकार्डो के 'तुलनात्मक लाभ के सद्धांत' ने मुक्त व्यापार के लए एक बौ द्धक पूंजी प्रदान की l रिकार्डो के अनुसार एक देश की स्थिति जैसे जलवायु और अन्य प्राकृतिक एवं कृत्रिम कारक कुछ वस्तुओं के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ प्रदान करते हैं l इस लए प्रत्येक देश उन वस्तुओं के उत्पादन में वशेषज्ञता प्राप्त कर सकता है जिनका तुलनात्मक लाभ है l जर्मी बेंथम ने अनुसार मुक्त व्यापार सभी मनुष्यों को अपने आनंद को अ धकतम करने और उनके दु:ख को कम करने की अनुमति देता है l

फ्रांस में राजनीतिक क्रांति और इंग्लैंड में औद्यो गक क्रांति के कारण उपनिवेशों से कच्चे माल का वशाल प्रवाह , उपभोक्ता वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन , यूरोप में बाजारों और इसकी कॉलोनियों का तेजी से वकास तथा दुनिया भर में तेजी से भौतिक उन्नति से यूरोप ने उदारवाद को आधुनिक समाज के लए एक आदर्श के रूप में स्था पत कया l यद्य प औद्यो गक यूरोप और उपनिवेशों में उभरने वाली नई सामाजिक , राजनीतिक एवं आ थक व्यवस्था समस्याओं से मुक्त नहीं थी l इसने समाज में पूंजीपति वर्ग व सर्वहारा वर्ग के बीच वभाजन पैदा करने में अहम भू मका निभाई l यह नई स्थिति शोषण के लए अनुकूल थी और इसने प्रत्येक सामाजिक मानक में सर्वहारा वर्ग की स्थिति को खराब कर दिया l प्रारंभ में उदारवाद के समर्थकों ने तर्क दिया क औद्योगीकरण द्वारा उत्पन्न समस्याओं को मुक्त बाजार से ही हल कया जाएगा l उनके अनुसार धन पूंजीपति वर्ग से सर्वहारा वर्ग तक ट्रिकल-डाउन के प्रभाव से प्रभा वत होगा l इस प्रकार पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग के हितों में सामंजस्य होगा और अंततः सभी सामाजिक एवं आ थक समस्याओं का समाधान होगा l इस स्थिति को प्राप्त करने के लए उदारवादियों ने अ धक आ थक सुधारों और न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप का समर्थन कया l ले कन बाद में बढ़ती असमानताओं ने उदारवादियों के दावों के वपरीत श्र मक वर्ग आंदोलनों और मार्क्सवाद द्वारा प्रस्ता वत अतिवादी वचारधारा को जन्म दिया l

यूरोपीय उपनिवेशवाद ने उपनिवेशों की सामाजिक, आ थक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं का पुनर्गठन कर उनकी अर्थव्यवस्था को समाप्त कर दिया l यूरोपीय शक्तियों ने अपने उपनिवेशों को कच्चे माल के प्रदाता और पूंजी व तैयार माल के भंडार के रूप में तब्दील कर दिया l इसने एक निर्भरता बनाई जो उपनिवेशों के औपचारिक रूप से स्वतंत्र होने के

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बाद भी जारी रही l इस प्रकार निर्भरता सद्धांतकारों ने उदारवादी वचार कों द्वारा प्रस्तुत तुलनात्मक लाभ के सद्धांत को एक हानिकारक मथक बताते हुए इसका खंडन कया है l

आधुनिकीकरण सद्धांत बड़े पैमाने पर औद्यो गीकरण, आ थक वकास के उच्च स्तर और उदार लोकतांत्रिक मूल्यों के रूप में वकास की परिभाषा करता है l निर्भरता सद्धांतकारों के अनुसार आधुनिकीकरण सद्धांत नृजाति केंद्रित है और दुनिया के अन्य भागों में तथा उनके अद् वतीय ऐतिहा सक अनुभवों के लए सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्था की उपेक्षा करता है l इनके अनुसार आधुनिकीकरण सद्धांतकारों ने व्यापार और निवेश के मामले में वक सत और वकासशील देशों के बीच आ थक संबंधों में निहित शोषण की उपेक्षा की है l

वैश्वीकरण का वर्तमान चरण नव उदारवादी वैश्वीकरण है जो अंतर्राष्ट्रीय निगमों द्वारा वर्चस्व रखता है l निर्माण वस्तुओं का उत्पादन कुछ निगमों के हाथों में केंद्रित है जो वैश्विक स्तर पर एक कुलीन बाजार बनाता है l निर्भरता सद्धांतकारों के अनुसार यह उत्पादन धीमा कर आय ध्रुवीकरण को गति देगा l नव उदारवादी वैश्वीकरण पूंजी के लए मूल और अंतर्राष्ट्रीय वत्तीय संस्थानों पर परिधीय राज्यों की बढ़ती निर्भरता को देखता है जो उनकी नीतियों को निर्धारित करने और लागू करने में उनकी संप्रभुता को बहुत कम कर देता है l उदाहरण के लए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा निर्धारित 'स्ट्रक्चरल एडजेस्टमेंट प्रोग्राम्स' ने परिधीय राज्यों को कल्याणकारी योजनाओं को हटाने और मुक्त आ थक नीतियों को अपनाने के लए मजबूर कया l ऋण, रॉयल्टी, मुनाफे और तैयार माल के बड़े पैमाने पर आयातों के भुगतान के लए परिधीय राज्य कोर राज्यों को एक बड़ी रा श हस्तांतरित करते हैं l पूंजी का यह हस्तांतरण परिधीय राज्यों में धन की कमी बनाता है जो उनके घरेलू उद्योग और बुनियादी ढांचे के वकास के लए निवेश करने की उनकी क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है l

वकासशील देशों पर निर्भरता के प्रभाव पर अनेक अनुभवमुलक अध्ययन हुए हैं l टेरेसा हैटर ने अपनी पुस्तक 'एड एज इंपीरिय लज्म ' (1971) में बताया है क कोर देश ऋण, प्रौद्यो गकी के रूप में वदेशी सहायता और ह थयारों का उपयोग द क्षण के वकासशील देशों के वकास के लए नहीं कर अपने लए करते हैं l बुनियादी ढांचे के वकास के लए वदेशी सहायता से वकासशील देशों के लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने में मदद नहीं मली है बल्कि इसने उनकी अर्थव्यवस्था को वकृत कर दिया है और उन्हें कर्जदार देशों में बदल दिया है l उदाहरण के लए ब्राजील और मैक्सिको 1980 के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दशक में ऋण अदायगी के कारण कर्जदार देश हो गए l इस प्रकार निर्भरता सद्धांतकारों का मानना है क अंतर्राष्ट्रीय निगमों और वत्तीय संस्थानों के वर्चस्व वाला नव उदारवादी वैश्वीकरण कोर और परिधीय राज्यों के बीच आ र्थक अंतर को बढ़ाएगा और परिधीय राज्यों की आ र्थक स्थिति को और कमजोर करेगा l

## आलोचनाएँ

वकास के उदारवादी और आधुनिकीकरण दृष्टिकोणों की आलोचना के रूप में निर्भरता सद्धांत का आ वर्भाव हुआ है l हाल के वर्षों में निर्भरता सद्धांत अपने वरोधी सद्धांतों द्वारा आलोचना के केंद्र में रहा है l उदारवादी और आधुनिकीकरण सद्धांतकारों के अनुसार ए शया टाइगर्स (संगापुर , द क्षण कोरिया , ताइवान व हांगकांग) की सफलता निर्भरता सद्धांत के दावों को निरस्त करती है l ए शयाई टाइगर्स तेजी से औद्योगीकरण के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने और उच्च वकास दर को बनाए रखने के साथ-साथ वक सत देशों की अर्थव्यवस्थाओं के साथ प्रतिस्पर्धा करने एवं उसे चुनौती देने में सफल रहे हैं l उदारवादी सद्धांतकारों के अनुसार निर्भरता सद्धांत ए शयाई टाइगर्स जैसी अर्थव्यवस्थाओं की सफलता के कारणों की व्याख्या करने में असमर्थ है l ग्रेबियल आलमंड जैसे राजनीतिक वचारको का मानना है क निर्भरता सद्धांत एक सद्धांत की बजाय राजनीतिक प्रचार अ धक है l

जान गोल्डथोरपे और ब्रैंडट रिपोर्ट (1980) कोर और परि ध के बीच आ र्थक संबंधों पर अतिवादी निर्भरता सद्धांतकारों के मत को लेकर उनकी आलोचना करते हैं l आंद्रे गुंडर फ्रैंक के अनुसार निर्भरता केवल अ वक सत वकास को ही बढ़ाती है और कोर देश परि ध देशों के वकास में कोई रू च नहीं रखते हैं l इसके वरोध में उदारवादियों का कहना है क औद्योगीकरण, नए निवेश एवं नए बाजार के स्रोत के रूप में वक सत होने के लए कोर को परि ध की आवश्यकता है l ब्रैंडट रिपोर्ट के अनुसार परिधीय राज्यों के लए वश्व आ र्थक व्यवस्था का असंतुलन उसके उन्मूलन की तुलना में आवश्यक है l आंद्रे गुंडर फ्रैंक ने 'क्राइ सस इन वर्ल्ड इकोनामी ' (1980) में अ वक सत वकास पर अपने वचार बदलते हुए स्वीकार कया क परिधीय राज्यों में भी औद्यो गक वकास संभव है l इसी प्रकार फर्नांडो हेनरिक कारडोसो ने 1970 के बाद से कच्चे माल के निर्यात पर निर्भरता में कमी और औद्योगीकरण में ब्राजील की सापेक्ष सफलता के बारे में बताते हुए लखा क वश्व पूंजीवाद के वकास ने औद्यो गीकरण के अवसर खोले हैं l इसका अर्थ यह है क निर्भरता अलग-अलग देश और क्षेत्र में भन्न - भन्न होती है l अतिवादी निर्भरता सद्धांत की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आलोचना इसके पूर्व स्थिति के लए भी की जाती है l यह सद्धांत पूंजीवाद को मूल समस्या मानता है जब क इन सद्धांतकारों ने कम्युनिस्ट ब्लॉक के देशों के भीतर निर्भरता संबंधों को नजरअंदाज कर दिया l उदाहरण के लए शीत युद्ध काल में साम्यवादी कोर (तत्कालीन सो वयत संघ) और उसकी परि ध (सो वयत संघ के साथ संबंध देशों) के बीच निर्भरता संबंध मौजूद थे l

उदारवादी और आधुनिकीकरण वचारकों के साथ -साथ मार्क्सवादी लेखकों ने भी निर्भरता सद्धांत की आलोचना की है l समीर अमीन ने 'एन इक्वल डेवलपमेंट: एन एस्से ऑन द सोशल फॉरमेशन ऑफ पेरिफेरल कै पट लज्म' (1976) में कहा है क फ्रैंक द्वारा बताए गए अतिवादी निर्भरता सद्धांत का ऐतिहा सक वश्लेषण बहुत सामान्यीकृत है l फ्रैंक का सद्धांत इथो पया के पछड़ेपन से लेकर ए शयाई टाइगर्स के बढ़ते उद्योगों तक परिधीय राज्यों के वकास की असमानता को दिखाने में वफल रहता है l परिधीय राज्यों के भीतर निर्भरता की अनदेखी करते हुए केवल कोर व परि ध राज्यों के बीच ऐसे संबंधों की व्याख्या करने के लए भी अतिवादी निर्भरता सद्धांत की आलोचना की जाती है l

अर्जेंटीना के मार्क्सवादी वचारक अर्नेस्टो लाकलाऊ ने फ्रैंक के निर्भरता सद्धांत की आलोचना करते हुए कहा है क फ्रैंक के निर्भरता सद्धांत में उत्पादन से संबं धत मार्क्सवादी वश्लेषण एवं उत्पादन के तरीकों का कोई वर्णन नहीं है l यह सद्धांत परि ध से कोर तक अ धशेष के प्रवाह का एक वर्णन मात्र है l इसके अतिरिक्त मार्क्सवाद के एक महत्वपूर्ण घटक वर्ग संघर्ष की आंतरिक गतिशीलता की उपेक्षा के लए भी फ्रैंक के वश्लेषण की आलोचना की जाती है l

उपरोक्त आलोचनाओं के बावजूद बिल वारेन जैसे वचारक निर्भरता को एक प्रगतिशील चरण के रूप में देखते हैं l उन्होंने अपनी पुस्तक 'इंपीरिय लज्म: पायनियर ऑफ कै पट लज्म' (1980) में लखा है क निर्भरता ने परिधीय राज्यों को सामंतवाद से पूंजीवाद में बदलने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई है जिससे समाजवाद का रास्ता आसान हो गया है l कोर राज्यों ने परिधीय राज्यों को न केवल कौशल, पूंजी और तकनीकी प्रदान की है बल्कि इनको व शष्ट वर्ग संघर्ष के लए भी तैयार कया है । परिणामस्वरूप इन राज्यों में सर्वहारा वर्ग पूंजीवादी शोषण के बारे में सचेत हो कर इसके खलाफ संगठित हो पायेगा ।

## संदर्भ

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1. बरन, पाल ए.; द पॉलीटिकल इकॉनोमी ऑफ ग्रोथ, मंथली रिव्यू प्रेस, न्यूयार्क, 1957

2. इमैनुएल, अ र्धरी; अनइक्वल एक्सचेंज: ए स्टडी ऑफ द इं पीरिय लज्म आफ ट्रेड, मंथली रिव्यू प्रेस, न्यूयार्क, 1972

3. इवांस,पीटर; डपेंडेंट डेवलपमेंट: द एलायंस ऑफ मल्टीनेशनल , स्टेट एंड लोकल कै पटल इन ब्राज़ील, प्रंसटन यूनिव र्सटी प्रेस, प्रंसटन, 1979

4. कसान, ब्रायन आर. ; क्वेश्चन ऑफ डपेंडेंसी एंड इकॉनो मक डेवलपमेंट: एक क्वानटेटिव एना ल सस, लेक्सिंगटन बुक्स, लानहम, 1999

5. फायरबाख, ग्लेन; द न्यू ज्योग्राफी ऑफ ग्लोबल इनकम इकॉनोमी, एम ए हार्वर्ड यूनिव र्सटी प्रेस, कैंब्रिज, 2003

6. फ्रैंक, आंद्रे गुंडर ; कै पट लज्म एंड अंडर डेवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका: हिस्टोरिकल स्टडीज ऑफ चली एंड ब्राज़ील, मंथली रिव्यू प्रेस, न्यूयार्क, 1967

7. कोहली, अतुल; स्टेट डायरेक्टेड डेवलपमेंट: पॉलीटिकल पावर एंड इंडस्ट्रियलाइजेशन इन द ग्लोबल पेरीफेरी, कैंब्रिज यूनिव र्सटी प्रेस, कैंब्रिज, 2004

8. वालरस्टीन, इमैनुएल; वर्ल्ड सस्टम एना ल सस: एन इंट्रोडक्शन , ड्यूक यूनिव र्सटी प्रेस, दरहम, 2004